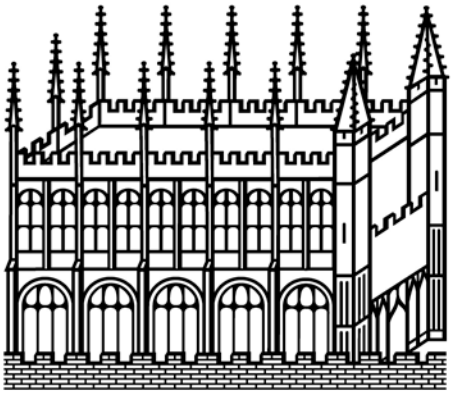

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

(13.B.21(a)) Hindi misc. B 16/1

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

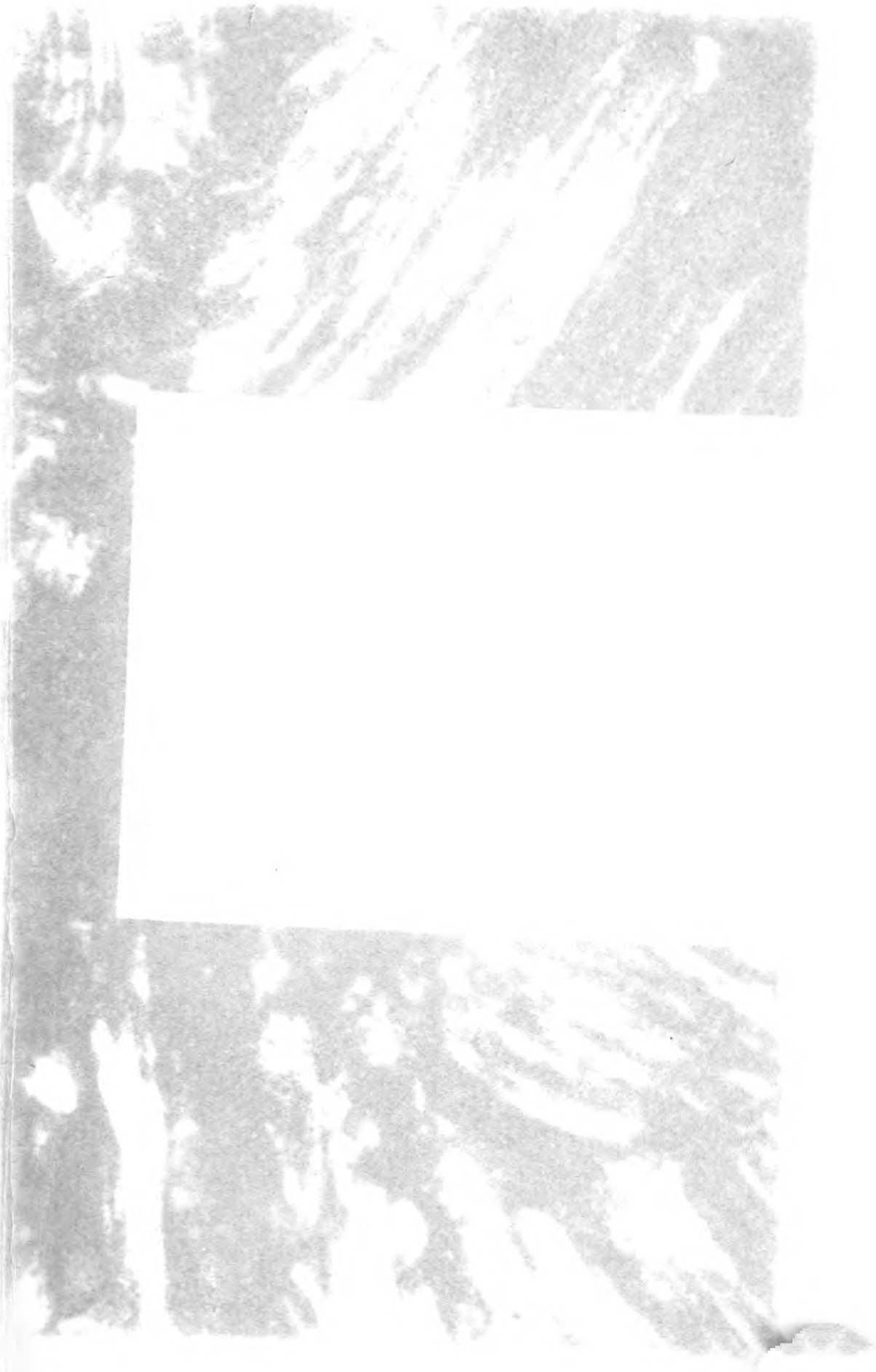

Hindi Poetical Pieces.

अंगरेज़ीरायलरीडरोंकेकवितायिकपदोंका उल्था।

हिन्दी भाषा के कवितायिक पदों में बाबू हीरालाल असिस्टंट मास्टर ज़िला स्कूल बिलासपुर सेन्ट्रल प्राविन्सिज़ ने किया॥

A TRANSLATION

OF ALL

THE ENGLISH POETICAL PIECES

OF

ENGISH ROYAL READER NO. I.

INTO

HINDI POETICAL PIECES

BY

MUNSHI HIRA LAL,
ASSISTANT MASTER,
ZILA SCHOOL, BILASPUR,
CENTRAL PROVINCES.

ALL RIGHTS RESERVED.

स्थान लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के यन्त्रालय में छपा॥

अगस्त सन् १८८१ ई०

सिवाय इस यंत्रालय के किसी को अधिकार नहीं है कि इसको वा इसके आशय को छापे वा छपवावे॥

रायलरीडर नम्बर १ ॥

भूमिका ॥

हे बिद्या भूषितो ! अंग्रेजी भाषालिखित रायल रीडरों के सब कबितायिक भागों का उल्था बालकों के उमंगानन्द के अर्थ हिंदी भाषाके कबितायिकभागों में आपलोगों की कृपा प्रदवध्यानद सेवा में साधीनता अर्पित कियाजाता है सो इस प्रकार से है अर्थात्रायलरीडरों में अंग्रेजी में जितने भर कबितायिक चिच बिचिच नानाबिध भिन्न भिन्न पद हैं सो सब के सब हिन्दी भाषा में रंगबरंग बिबिधि भांति सुन्दर सुन्दर दोहे सोरठ चौपाई नानाछन्दादि में उल्थित किये गये हैं अंग्रेजी पदों में जहां जहां पदों की प्रत्येक पांति का तुक व माचाक्षर साहट मिलता है तहां तहां सबका सब तदनुसार हिन्दी पदों के प्रत्येक स्थान मेंभी सब प्रकार आहटमय वशब्दमय मिलता है और हिन्दी पदों की उक्त प्रकारी रचना में किसी प्रकार की भंगता दर्शित नहीं से पर कबिता की रीतों के अनुसार सब पद भलीभांति ससौंदर्य्य रचित है यह भी संकलित है कि अंग्रेजी पदों के किसी शब्द को उल्थाकेबाहिर त्यागना सावश्यक्ता बलभाज्य नहीं हुआ है पुनि यहां उन का अर्थ अर्थात् सारार्थ व प्रसारार्थ लेशमाच भी नष्टबिनष्ट नहीं हुआ हे बिद्यावलम्बित जन चाहें तो हस्तस्थित पुस्तकों का ऐसा पठन करें कि मानो ये ग्रन्थ बहुधा उल्थाकृत नहीं है जो बिद्वज्जन कि अंग्रेजी

भाषा से बिभूषित हैं वे लोग कृपा पूर्बक इन ग्रंथों को अंगरेजी रीडरों से मिला मिलाकर निरखें परखें तो कथित अर्थानन्द स्वयंसिद्ध बिदित होजायगा इन उल्थाकृत पुस्तकों में बाहुल्य पूर्बक ऐसे २ सहज २ शब्द भरित व उपयुक्त हैं कि जो साधिक्यता निशिबासर बालकों के साधारण स्वाभाविक वर्ताव के मध्य उपयुक्तहोते हैं अन्त को यह बिनय संमुख है कि बिना बिचारे कोई जन्तु इन पुस्तकों की ओर हास्य कोपीव घृणा मयी दृष्टि न देवें व इन में कुछ शोधन न करें करना तो अधिकारके बाहिर है हां यदि कोई बिद्यामान चाहें यदि किसी भी प्रकार के कोई दोष उन की समझ में दृष्टपड़ें और यदि उन्हें उन पर कुछ कथन श्रवण करना हो तो उन्हें कृपा पूर्बक क्षमामयी दृष्टि से चिट्ठी पत्री के द्वारा उल्था कर्त्ता के अल्पध्यान में लावें तो निश्चित प्रतिज्ञा है कि उनके ऐसे बर्णित प्रश्नों का सत्य सत्य उत्तर भली भांति मिलजायगा क्योंकि यहां स्थान इतना बिस्तृत नहीं है कि भाषित भाषणों की बिरुद्धता के सब कारण और निर्माण यथोचित लिखित कृत होवें कदाचित् ऐसी काठिन्यता अंगरेजी प्रार्थना संबंधी छन्दों को हिन्दी तोटक छन्दों में लाना सासंभाव्यता उपयुक्त हुई है यथेष्ट समय मिलेगा तो इन्हीं रीडरों के गद्यभागों का भी उल्था किया जावेगा ॥

इत्यलम्

॥ हीरालाल ॥

रायल रीडर नम्बर १ ॥

सूचीपत्र ॥

विषय	पृष्ठ
पक्षी का गाना—दोहा	५
प्रभात और रात—तोमरछन्द	५
जंगली पक्षी—दोहा	५
छोटी पुसी—दोहा	५
मेरी पुसी —दोहा	६
पशुपक्षी बुद्धि—लवायीवृतछन्द	६
स्वगर्व्व—दोहा	६
फिस्कऔरनेड—तोमरछन्द	७
मैं अपने छोटेकुत्ते को दुख नहीं दूंगा—त्रिभंगीछन्द ..	७
मेरीका छोटा मेम्ना—सोरठ	७
किसीकार्य को एकहीबार करना—लवायीवृतछन्द .	८
बालानन्ददायक कविता—दोहाचौपाई	८
दर्शगिनो—दोहा	८
रातका सलाम—चौपाई	९
चणा—चौपाई	९
क्षमाकरना—हरिगीतिकाछन्द	९
बसन्तऋतु—जतुष्पदिकाछन्द	९
निष्फलमत खर्चोतोन्यूनतानहोगी—दोहा ..	१०
छोटे २ लोगोंके हेतुबार्त्ता—चौपाई .. .	१०
कोपका अंत्यशब्द—दोहा	१०
उष्णकाल—दोहा	११

विषय	पृष्ठ
पतझड़—दोहा	११
चूहे—दोहा	११
घड़ीकाशब्द—चौपाई	११
न्यायसेकरो—चौपाई	१२
सायंकाल—तोटकछन्द	१२
प्रातःकाल—तोटकछन्द—सुखमातोटकछन्द	१२
भोजनकेप्रथम—चौपाई	१२

॥ रायलरीडर नम्बर १ ॥

॥ पक्षीकागाना ॥

॥ दोहा ॥

गाव पखेरू गाव इक, गाथा कारण मोर।
एक पुरुष ता ठांव है, चिन्तत है लगि तोर॥
दिवस प्रति दिवस ताहिकर, दृढ़ अरु दाहिन पानि।
राखत द्वितो मोहि कहं, दूर दूर सों हानि॥

॥ प्रभात और रात ॥

॥ सोमर छन्द ॥

मोहे नाहीं तरास, काहे ईश्वर पास॥
रैनकारि महं सोइ, प्रकाश दिवस करहोइ॥
जब मोहि नींद आवत, रक्षित दृष्टिहे राखत॥
काहे चाहो तरास, जबहीं ईश्वर पास॥

॥ जंगली पक्षी ॥

॥ दोहा ॥

मैंन कठ गृह बन्धचहौं, यदि सुबरण कर होय।
चाहौं भलबन गानहीं, उड़ तरु तरु सों सोय॥

॥ छोटी पुसी ॥

॥ दोहा ॥

हौं प्रेमहु लघु पुसीकहं, रोंआ अस गरमानि।
यदि नहिं चोटहुं ताहि मैं, सो न करै मो हानि॥
अरु न खैंचहुं लांगूलहिं, नहिं देवहुं तिहिपेल।
परपूसी अरु हौं बहुत, सधीर खेलहिं खेल॥
सो बैठहि मम कगर सों, देवहुं भोजन ताहि।

पूसी मो कहं प्रेमही, मैं हैं उत्तम काहि ॥

॥ मेरी पुसी ॥

॥ दोहा ॥

आदेखहु मिस पुसी कहं, पीवत है पय पान ।
रोम अस कोमल चीकन, जैसो पाटहिं मान ॥
सो सुरकत है दुग्ध कहं, सहित लघु लपलपाइ ।
तब पोंछत निज मूंछ कहं, लेटत एक उंघाइ ॥
मोर किटी सुकुमार है, प्रेमत बहुत सुभांति ।
कस रसिक तस क्रीड़ा है, निश्चित कहो न जात ॥
कबहूं नीच सो फाकर, कबहुं मेज तर होय ।
धाव खेल भांका भांकु, जस जस करसक सोय ॥
सनेह मैं प्रेमहुं तिहि, कबहुं न देखहु जोहि ।
दो सुखीतर खिलवाड़ी, छांड़ि किटी अरु मोहि ॥

॥ पशुपक्षी बुद्धि ॥

॥ लवायी वृत छन्द ॥

को सिखाव पक्षी बन खोप कर, जन तृण काई करा ।
को सिखाव ताही बूनन बर, राखन डार अरपरा ॥
को सिखाव कामी माखि उड़न, मधुर तम पुष्पन महीं ।
अरु मधुकर सरंजाम राखन, खान शीत घरी पहीं ॥
को सिखाव चिउंटि रीति कहं, लघु छिद्र बनावनहीं ।
अरु सुखदायक उष्णदिवस महं, निजकोष जमावनहीं ॥
है ईश सु सिखात सबरीती, दीन्ह लघुबुद्धि गुणकी ।
सिखात बालहिंजोकर बिनती, करन निज शुचिमनकी ॥

॥ स्वगर्ब्ब ॥

॥ दोहा ॥

चाहहु जनि जल्पना कहं, प्रेमहु जनि गर्ब्बाहिं ।

शोकहि आवत ताही, जो गरबत अधिकाहिं ॥

॥ फ़िस्क और नेड ॥

॥ तोमर छन्द ॥

दोउ पाछू पाद पर, फ़िस्क मांगत बैठ कर ॥
बैठ नेड घूटन पर, गया एक दो तीन कर ॥
तब फ़िस्क नासिका पर, फेंकत टूक रोट कर ॥

॥ मैं अपने छोटे कुत्ते को दुःख नहीं दूंगा ॥

॥ त्रिभंगी छन्द ॥

होंनचोटआनहुं, निजलघुश्वानहुं, सकरभपावहुं, सिसिरमहीं॥
चहुंनिरखनवाही, दुमहिलनाही, चहुंदिखवाहीं, खवानहीं ॥
बपुरालघुजीवा, करसअतिभलवा, फलप्रदबहुवा, सोअहही ॥
कानहिं तुम जाना, सोहू माना, आज्ञा पाना, सोकरही ॥
तोकभुन लगावहुं, चोट श्वानहु, कबहूंन देवहुं,दुखवोही ॥
मानहुंतिहिंसदया, प्रतिप्रतिदिनया, सोकररतया, पुनिमोही ॥

॥ मेरीका छोटा मेम्ना ॥

॥ सोरठ ॥

मेरी मेमन पाइ, लघु तस रोम श्वेत हिम ।
जहंजहंमेरीजाइ, मेमन निश्चित जात तिमि ॥
सो गयेउ शालाहिं, दिवस एक नहिं रीति कर ।
भयो बाल बालाहिं, कौतुक मेमन पाठ घर ॥
पाठक तबतो ताहि, बहि कीन्ह बिलमेउ तहं ।
तृणमहं खेलत जाहि, जौलों निरखत मेरिकहं ॥
एक बार ता पास, दौरि राख सिर बाहु पर ।
मनो कहत न त्रास,ममसब हानितें रचकर ॥
काहे मेमन मेरि, अस प्रेमित लघु बाल कह ।
ओह प्रेम सो मेरि, जानहु पाठक उतरु कह ॥

॥ किसी कार्यको एकही बारकरना॥

॥ लवायी वृत छन्द ॥

काज करहु जब काज करहु अरु खेल करहु जबखेलो।
यही सो रीति जाते सब होत सुखी अरु चटकैलो॥
सकल जोकछु करहु तुम करहु भर बल सब अपनोही।
काज कियो अधूरो नहीं होत कबहुं सत मानोही॥
इक काज बार एक करहु अरु सोहु बने बहु भांती।
है अति चोकस रीति यही बहु लोकन के मन राती॥
छण सब निष्फल जात अरु निष्फल ऐसे जाहिं चले।
काज करहु जबकाज करहु अरु करहु खेल जब खेले॥

॥ बाला नन्ददायक कविता ॥

॥ दोहा ॥

बसत एक वृद्ध नारी, गृह पद रच समान।
बहु बाल एते ताके, करन काह नहिं जान॥
दीख लघु पची बार इक, आवत चौकड़ि मार।
तबतो कहेउं लघु पची, निज रोक धार धार॥
जात रहेउं झरोख कहं, कहन कुशल तेा आहि।
पर डुलाये लांगुलहीं, उड़त गयेउ पराहि॥

॥ चौपाई ॥

नृतलघु बालक नृतऊंचेरे। डरनहिं बालक जननीनेरे॥
हूंकहुउछलहुउछलहुंकारी। उतलघुबालकचल नतुम्हारी॥
ऊपर छतलों नीचे धरणी। आगेपाछे चहुंचहुं फिरणी॥
नृत लघु बालक जननी गावे। हरषहरष झनझना बजावे॥

॥दसगिनो॥

॥ दोहा ॥

प्रथम कहहु तुम बेग कर, गिनहु गिनहु दस बेर।

अरु तुम क्रोधी होउ बर, गिनहु गिनहु पुनि फेर॥

॥ रात का सलाम ॥

॥ चौपाई ॥

लघु बालक राखहु गृहभेजा। ऊपर सुन्दर पलनासेजा॥
मूंदहुनयनकाहदिनअबहीं। अरुउजियारगयेातबतबहीं॥
जकड़हो बांधेबस्तर सारे। सलामले लघु बालक प्यारे॥
मम प्यारेजानहुं भलभांती। तोती कैसन चाले बाती॥
जाड़ोकेर तुहिन अरुपानी। तड़तड़खिड़की परकलसानी॥
परते सकत न भीतर मारे। कारण ममलघु बालकप्यारे॥
खिड़कीलागीदृढ़अतिभांती। जोलों बातीर जनी जाती॥
मसहरी उष्ण हैं फैलाये। चहुं ओर तबपलना लगाये॥
सेा जोलों प्रातन उजियारे। सलामले लघुबालक प्यारे॥

॥ क्षण ॥

॥ चौपाई ॥

क्षणक्षण उड़इक मिनट आवे। मिनट चलें घंटा दरसावे॥
दिवसजात आवत पुनिराती। अठबारमासबर्षसबजाती॥

॥ क्षमा करना ॥

॥ हरि गीतिका छन्द ॥

अहो चलहु सदा बिनती सहित, करत बिनय कृपालहें।
रहहीं हम उपस्थित क्षमा कहं, जाते हम क्षमा गहें॥

॥ बसन्त ऋतु ॥

॥ चतुष्पदिका छन्द॥

ईश करत सबही, यहहै पथही, देत अनभोज सोहीं।
भक्षण मधु मूलहीं, रुचिप्रदफलहीं, ताहम पोसितहोहीं॥
लोकहु कभु नाहीं, पौधा काहीं, पुष्प तरु ऊपर कोहू।
बरन करहु शोचहु, कसभल ईशहु, नितधनबादीहोहू॥

॥ निष्फल मत खर्चो तो न्यूनता न होगी ॥

॥ दोहा ॥

हौं न फेकहुं गच ऊपर, परत सकहुं नहिं खाइ ।
क्षुधित क्षुधित बहु जन्तु लघु, मानहिं अति पहुनाइ ॥
हठी हानि दे शोक मन, कहिहौं कहनी एक ।
हौं मन चाहौं होत परत, जो तब दीन्हो फेंक ॥

॥ छोटे २ लोगों के हेतु बार्ता ॥

॥ चौपाई ॥

चाय बनतहै तरु पातीसों । मधुजमत है बनेमाखीसों ॥
माखन मिले दूध गइयासों । पोर्कमांस घेंटसुअरियासों ॥
सेवसों साइडर उत्तम बनत । दाखरसमदिरा श्वेतरकत ॥
ठेपी बटतर बकला आहो । स्पंज तरुहो सागरमाहीं ॥
तेल रोगन मीन सनतरुसों । बातीबने चर्बी मधुमलसों॥
पटुवाबसनसन झोथराकर । कागज़ होवे तृणचिथराकर ॥
सूतगरम कोमल ऊननसों । पाटन जात बुने कीटनसों ॥

॥ कोप का अन्त्य शब्द ॥

॥ दोहा ॥

लघु बाल प्रेमहुं परहीं, देवहु नहिं दुख भार ।
भ्राता भाषे कोप महं, उतर न कोप मझार ॥

॥ उष्ण काल ॥

॥ दोहा ॥

ग्रीषम काल मैं जानत, नीरे बादर होइ ।
तरुवरअतितर हरितसों, तर उनके मैं सोइ ॥
खरखराहिं तेज हंसिया, काटक कर दिन फेर ।
ते फैलावहिं बायु महं, बासी पयान फेर ॥
हे ग्रीषम मधुर ग्रीषम, जावहु धीरे धीर ।

प्रेमहुं गरमी घाम महं, हैंहू खेलन क्रीर ॥

॥ पतझड़ ॥

॥ दोहा ॥

पातझड़ बतास चालत, सांसत तरुवर मांहि ।
पाकी बाल हैं डोलत, डोल पवन कर ठांहि ॥
कटनी इन्दु है चमकत, चमकत रजनी जाहि ।
ऊपर परबत कन्दरा, उज्वल तोयन मांहि ॥
अबा बील आ मेलहीं, मिलहीं ओरी फेर ।
निहारहिं बाट गिरन कर, गिरनहिं पाती केर ॥
ते जानहिं आवत समय, समय जबहिंते जाहिं ।
रबि उजलतर प्रकाश महं, दूरउदधि नहकाहिं ॥

॥ चूहे ॥

॥ दोहा ॥

सुखी मूष बस बिलन महं, लुकाहिं दिनकेमाहिं ।
जब गृह सूनो रात्रि कहं, अधम खेलकहंआहिं ॥
चघत भंडार मचानहीं, लेत स्वाद जेा चाहिं ।
पीवहिं पय साड़ी अरथ, रोट पनीर चबाहिं ॥
यदिते सुनहिं बिलार खट, बेग भोज होजाहिं ।
दूरभाजहिं लुकाहिं तब, बलभर जाहिं पराहिं ॥

॥ घड़ी का शब्द ॥

॥ चौपाई ॥

घड़ीभाषतहैटिकटिकटिका । जोकछुकरहु करहुझटतिहिका ॥
काल जातहे बेगहिं भाजा । चलहु करहु अरु पूरहुआजा ॥
यदत्रपि पाठ पाव तुमकोऊ । करहुअबहिं रगड़हु नहिंसोऊ ॥
वहो केवल खेल मन आछे । आवहीं जो काज भा पाछे ॥
जबतब जननी भाषतमानो । टालहुनाहिं बिलम्ब न ठानो ॥
लोकहुनाहिं दूसरटिकटिका । जोकछुकरहु करहुझटझटिका ॥

॥ न्याय से करो ॥

॥ चौपाई ॥

दया अरु प्रेम सबसों लेवें । नहिं दूसर ऋण ईश्वर देवें ॥
दया अरुनेह तबहम देहीं । प्रतिइक जनहीं प्रतिदिनमेहीं ॥
लेवहिं उधार और बिसाहीं । देवें पुनि ईश परीक्षाहीं ॥
निज न्यायनसों करतबमोरे । सेवहिं ताहिसकल दिनहोरे ॥
न्याई सत्य सत्य सदाई । कथितहिंकरहु सहित सचिताई ॥

॥ सायंकाल ॥

॥ तोटक छन्द ॥

इहरात अहम्यद सोव करों । दयडारहुं नाथहिं प्राणधरो ॥
यदिहों मरिहों प्रथमें उठिहों । बिनती करु नाथ जीव गहो ॥
ममछोट शय्याहिंअहं परतों । स्वर्गीय पिता सुनु मोरबतों ॥
परमेश्वर राखहु मो रयना । रखहो भलभोर प्रभाभयना ॥

॥ प्रातकाल ॥

॥ तोटक छन्द ॥

अब जागहुं देखहुं प्रात घरी । परमेश्वर राखत रात भरी ॥
करमोंभल ईशयहीकहनम् । रखहोनिरखो मुहिआज दिनम् ॥

॥ सुखमा तोटक छन्द ॥

नाथा मम ईशातो मंगनम् ; जब मोरहि सेजहिंहों उठहों ॥
सोजोकरूं औ सोजो कहनम्, तुष दायक होतव नेचनमों ॥

॥ भोजन के प्रथम ॥

॥ चौपाई ॥

तव करसों आवप्रति भलाई । धन तोही दिन भोजलगाई ॥
इहि के संग नाथ बर देहू । लगितव प्रताप हमहिं रहेहू ॥

॥ समाप्त ॥